विचार प्रवाह

जनसंख्या को अवसर में बदलने की चुनौती

हर जन्म नई संभावना लेकर आता है, लेकिन हर संभावना उपलब्धि में नहीं बदलती। यही प्रश्न विश्व जनसंख्या दिवस हमारे सामने खड़ा करता है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य जनगणना की तालिकाओं में नहीं, बल्कि उन चेहरों में लिखा होता है जिन्हें हम अक्सर केवल संख्या मान लेते हैं। एक नवजात शिशु किसी परिवार का नया सदस्य भर नहीं, बल्कि देश के भविष्य का पहला पृष्ठ होता है। विडंबना यह है कि उस पृष्ठ पर भविष्य लिखने की तैयारी किए बिना हम हर वर्ष नई प्रतियां जोड़ते जा रहे हैं। इसलिए सबसे बड़ा प्रश्न यह नहीं कि भारत में कितने लोग हैं, बल्कि यह है कि उनमें कितनी संभावनाओं को अवसर मिला और कितनों को परिस्थितियों के भरोसे छोड़ दिया।

आज भारत 1.47 अरब से अधिक लोगों के साथ दुनिया का सबसे बड़ा जनसमूह है। इसे केवल भीड़ कहना उतनी ही बड़ी भूल होगी, जितनी बिना तैयारी के इसे शक्ति मान लेना। संख्या न वरदान है, न अभिशाप; वह केवल संभावनाओं का भंडार है, जिसका मूल्य इस बात से तय होता है कि राष्ट्र उसकी ऊर्जा को किस दिशा में ले जाता है। भारत की लगभग 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। अनेक विकसित देश घटती जन्म दर और वृद्ध होती आबादी की चुनौती से जूझ रहे हैं, जबकि हमारे पास युवा शक्ति का अवसर है, जो इतिहास बार-बार नहीं देता। किंतु अवसर तभी उपलब्धि बनता है, जब उसके पीछे दूरदर्शी व्यवस्था हो। केवल युवाओं की संख्या से राष्ट्र समृद्ध नहीं होता; शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल और रोजगार का सुदृढ़ आधार भी उतना ही आवश्यक है।

यहीं सबसे बड़ी विडंबना है। युवाओं की ऊर्जा प्रचुर है, लेकिन उसे दिशा देने वाली व्यवस्था अब भी अपेक्षाओं से पीछे है। शिक्षा डिग्री दे रही है, दक्षता नहीं; स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हैं, पर समान नहीं; रोजगार की आकांक्षाएं बढ़ रही हैं, लेकिन अवसर उसी गति से नहीं। परिणामस्वरूप युवा निराशा, असुरक्षा और दिशाहीनता के बीच अपने महत्वपूर्ण वर्ष गंवा देते हैं। यह केवल व्यक्तिगत नहीं, राष्ट्रीय हानि है। जिस ऊर्जा से नवाचार, अनुसंधान, उद्योग और सामाजिक परिवर्तन संभव थे, वही बेरोजगारी, पलायन और असंतोष में बदल जाती है। जनसंख्या का वास्तविक संकट यहीं से प्रारंभ होता है।

अब समय है कि बहस जनसंख्या नियंत्रण से आगे बढ़कर जनसंख्या की गुणवत्ता पर केंद्रित हो। किसी बच्चे का जन्म केवल जैविक घटना नहीं, सामाजिक उत्तरदायित्व भी है। उसे स्वस्थ शरीर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक कौशल और सम्मानजनक अवसर देना ही वास्तविक परिवार नियोजन है। शहरों में महंगाई और करियर की चुनौतियों ने बच्चों का पालन-पोषण महंगी जिम्मेदारी बना दिया है, वहीं गांवों में अवसरों का अभाव युवाओं को शहरों की ओर धकेल रहा है। परिणामस्वरूप गांव खाली हो रहे हैं और शहर अनियोजित विस्तार व भीड़ के दबाव से जूझ रहे हैं। इसलिए जनसंख्या नीति का संबंध केवल जन्म दर से नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास, रोजगार और संतुलित क्षेत्रीय विकास से होना चाहिए। तभी हर नया नागरिक देश की संपत्ति बनेगा, बोझ नहीं।

आज का युवा जीवित रहने के लिए नहीं, बल्कि सम्मानजनक और सार्थक जीवन के लिए संघर्ष कर रहा है। उसकी आकांक्षाओं में अच्छी नौकरी, सुरक्षित भविष्य, स्वच्छ पर्यावरण, समान अवसर, नवाचार और व्यक्तिगत विकास शामिल हैं। यदि ये अपेक्षाएं अधूरी रहीं तो आने वाले वर्षों में जन्म दर स्वाभाविक रूप से प्रभावित होगी और हमारे सामने भी वही स्थिति आ सकती है, जिससे आज कई विकसित राष्ट्र गुजर रहे हैं। इसलिए विश्व जनसंख्या दिवस का संदेश परिवार नियोजन तक सीमित नहीं रह सकता। इसे युवा सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, महिला शिक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा और सतत विकास के व्यापक दृष्टिकोण से जोड़ना होगा। जब प्रत्येक युवा अपनी क्षमता के अनुरूप आगे बढ़ सकेगा, तभी जनसंख्या राष्ट्रीय संपदा बनेगी। पर्यावरण और संसाधनों को लेकर हमारी सोच भी बदलनी होगी। यह कहना आसान है कि बढ़ती आबादी संसाधनों पर दबाव बढ़ा रही है, किंतु यह आधा सत्य है। वास्तविक प्रश्न यह है कि उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कैसे हो रहा है। असंतुलित उपभोग, अपव्यय और विकास की असमान शैली कई बार जनसंख्या से अधिक नुकसान पहुंचाती है। यदि तकनीक, नवाचार, नवीकरणीय ऊर्जा, स्मार्ट शहर, आधुनिक कृषि और संसाधनों के विवेकपूर्ण प्रबंधन को प्राथमिकता मिले, तो बड़ी आबादी भी सतत विकास की साझेदार बन सकती है। केवल जनसंख्या को दोष देकर नीतिगत कमजोरियों और सामाजिक जिम्मेदारियों से मुक्ति नहीं मिल सकती। भारत जैसा विविधताओं से भरा देश एक जैसी नीति से नहीं चल सकता। अलग-अलग राज्यों, क्षेत्रों, संस्कृतियों और आर्थिक परिस्थितियों की अपनी चुनौतियां हैं। इसलिए जनसंख्या प्रबंधन स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप लचीला होना चाहिए। शिक्षा में निवेश, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार, कौशल विकास और रोजगार सृजन—यही भविष्य के भारत के आधार स्तंभ हैं। इतिहास साक्षी है कि जब भी भारतीय मानव संसाधन को सही दिशा मिली, उसने असंभव को संभव बनाया। स्वतंत्रता आंदोलन से सूचना प्रौद्योगिकी और स्टार्टअप क्रांति तक हर उपलब्धि के पीछे संख्या नहीं, बल्कि प्रशिक्षित और प्रेरित मानव शक्ति ही निर्णायक रही है। विश्व जनसंख्या दिवस हमें नई दृष्टि अपनाने का अवसर देता है। हमें लोगों की गिनती से आगे बढ़कर उनमें छिपी संभावनाओं को पहचानना होगा। देश की सबसे बड़ी पूंजी उसके खनिज, इमारतें या बजट नहीं, बल्कि उसके नागरिक होते हैं। यदि हर बच्चे की शिक्षा में निवेश होगा, हर युवा को अवसर मिलेगा, हर महिला सुरक्षित और सशक्त होगी तथा हर क्षेत्र संतुलित विकास का सहभागी बनेगा, तो भारत केवल दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला राष्ट्र नहीं, बल्कि सक्षम, समृद्ध और प्रभावशाली राष्ट्र के रूप में पहचाना जाएगा। तब विश्व जनसंख्या दिवस केवल औपचारिक तिथि नहीं रहेगा, बल्कि उस राष्ट्रीय संकल्प का प्रतीक बनेगा, जिसमें हर जन्म को बढ़ती संख्या नहीं, भविष्य की संभावना माना जाएगा।

कृति आरके जैन
बड़वानी (मप्र)

झाबुआ में आर-पार की जंग

पूरा शहर 13 दुकानदारों के समर्थन में चट्टान की तरह खड़ा नजर आया

झाबुआ। नगर के बस स्टैंड स्थित नगरपालिका की धर्मशाला के नीचे संचालित 13 जर्जर दुकानों के पुनर्निर्माण का मामला अब तूल पकड़ चुका है। नगरपालिका और व्यापारियों के बीच चल रहा गतिरोध अब आर-पार की स्थिति में पहुँच गया है।

नगरपालिका के खिलाफ सड़कों पर उतरे व्यापारी, प्रशासन को सौंपा ज्ञापन

अभी तो यह अंगड़ाई है आगे और लड़ाई है के संकेत दे दिए हैं,

आज सोमवार को सकल व्यापारी संघ और युवा व्यापारी संघ के आह्वान पर झाबुआ शहर की व्यावसायिक गतिविधियाँ पूरी तरह ठप रहीं और व्यापारियों ने एकजुट होकर प्रशासन के खिलाफ दोपहर में राजवाड़ा चौक से रेली निकालकर जोरदार प्रदर्शन किया। रैली कलेक्टर कार्यालय पहुंची जहां प्रशासन को मुख्यमंत्री का नाम ज्ञापन सौंपा।

व्यापारियों ने की नारेबाजी :

नगर के मुख्य मार्गों से गुजरती व्यापारियों की विशाल रैली और नगरपालिका के विरुद्ध गगनभेदी नारेबाजी ने प्रशासन को हिलाकर रख दिया। व्यापारियों की रैली नगर पालिका कार्यालय के सामने से भी होकर गुजरी जहां नगर पालिका कार्यालय के खिलाफ सामने खड़े होकर नारेबाजी की। व्यापारियों का स्पष्ट कहना है कि यह लड़ाई केवल 13 दुकानदारों की नहीं है, बल्कि यह पूरे व्यापारी समाज के सम्मान, उनके अधिकारों और आजीविका की रक्षा का प्रश्न है। आज पूरा शहर पीड़ित दुकानदारों के समर्थन में चट्टान की तरह खड़ा नजर आया।

कांग्रेस का समर्थन :

झाबुआ बंद को कांग्रेस पार्टी ने भी अपना पूर्ण समर्थन दिया है, जिससे राजनीतिक पारा चढ़ गया है। जहाँ कांग्रेस इस मामले को नगरपालिका के खिलाफ एक बड़े मुद्दे के रूप में देख रही है।

बाजारों में सन्नाटा पसरा रहा

झाबुआ आज एक अलग ही तस्वीर पेश करता दिखाई दिया। शहर पूरी तरह बंद रहा और छोटे-बड़े व्यापारियों से लेकर विभिन्न सामाजिक, धार्मिक एवं व्यापारी संगठनों तक ने बंद को अपना समर्थन देकर यह संदेश दिया कि मामला केवल 13 दुकानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे शहर के भविष्य और व्यापारिक सुरक्षा से जुड़ा मुद्दा बन चुका है।

बंद के दौरान बाजारों में सन्नाटा पसरा रहा। बाजारों में सामान्य दिनों की चहल-पहल की जगह विरोध की आवाजें सुनाई दीं।

जुबानी जंग तेज :

कार्यकर्ताओं के बीच यह चर्चा आम है कि जो नेता कल तक व्यापारियों के साथ खड़े होने का दावा कर रहे थे, वे अचानक प्रशासनिक रुख कैसे अपना रहे हैं ? इस दोहरा रुख को लेकर कांग्रेस खेमे में भी जुबानी जंग तेज हो गई है।

पर्दे के पीछे कौन साध रहा अपना हित ?

शहर के चौराहों पर अब एक ही चर्चा है !आखिर इन 13 दुकानों के पीछे की असली साजिश क्या है ? लोगों के बीच यह सवाल तैर रहा है कि क्या दुकानदारों के अहित की आड़ में कोई निजी स्वार्थ सिद्ध करने में लगा है ?

क्या इसके पीछे कोई सोची-समझी राजनीतिक पटकथा है ? यह रहस्य आम चर्चा का विषय बना हुआ है।

परिषद फंट फुट से आई बैक फुट पर :

बस स्टैंड की 13 दुकानों के मामले ने सोमवार को शहर बंद कर नगर पालिका परिषद को साफ संदेश दे दिया है कि व्यापारियों के हित में काम करें, अन्यथा अभी तो यह अंगड़ाई है आगे और लड़ाई है के संकेत दे दिए हैं, जैसे ही शहर बंद की सुगबुगाहट परिषद के जिम्मेदारों को लगी वैसे ही आनंन फानन में शनिवार देर शाम प्रेस कांफ्रेंस आयोजित करना पड़ी। वही परिषद के तीन पदाधिकारियों ने कहा कि नगर पालिका व्यापारियों के हित में है और उनके साथ खड़ी है। व्यापारियों से अनुरोध किया कि वे बहकावे में न आएं। और अफवाहों पर ध्यान ना दे। इससे चौराहे पर चर्चा बनी की अभी अब ताबडतोप प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर सफाई दे रहे हैं इससे परिषद फंट फुट से बैक फुट पर आकर सफाई देने लगी।

भाजपा शासित परिषद में आज से पहले भी एक बार झाबुआ बंद रखा गया था, जिसका व्यापक असर देखने को मिला था।

क्या.. बस इतनी सी बात !

पीपीपी मॉडल का विरोध, दुकानों का निर्माण पीपीपी मॉडल के बजाय अन्य माध्यमों से कराया जाए। पुनर्निर्माण के बाद वर्तमान दुकानदारों को ही प्राथमिकता के आधार पर दुकानें आवंटित की जाएं।

दुकान बनकर देने की समय सीमा तय की जाए,

निर्माण की लागत पहले तय की जाए और व्यापारियों को शासन की गाइडलाइंस के अनुसार दुकान आवंटित करने का प्रस्ताव नगरपालिका में पारित किया जाए। उधर व्यापारियों ने दो टूक शब्दों में कह दिया है कि जब तक उन्हें न्याय नहीं मिलता, उनका संघर्ष जारी रहेगा। अब गेंद प्रशासन के पाले में है। देखना यह होगा कि प्रशासन इस आक्रोश को शांत करने के लिए क्या ठोस कदम उठाता है या मामला और अधिक गरमाता है।

झाबुआ के अंतर्राष्ट्रीय शतरंज खिलाड़ी चतुर्वेदी ने बढ़ाया मान, बड़ौदा में हासिल किया दूसरा स्थान

झाबुआ। झाबुआ के प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय शतरंज खिलाड़ी नरेंद्र नाथ चतुर्वेदी ने एक बार फिर अपनी बौद्धिक प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए खेल जगत में जिले का मान बढ़ाया है।

हाल ही में गुजरात के बड़ौदा में आयोजित प्रथम ज्योति सीएनसी अंतर्राष्ट्रीय क्लासिक शतरंज टूर्नामेंट में उन्होंने शानदार प्रदर्शन करते हुए वेटरन वरिष्ठ वर्ग में दूसरा स्थान प्राप्त किया है।

कड़े मुकाबले में लहराया परचम

यह टूर्नामेंट अंतर्राष्ट्रीय स्तर का था जिसमें विश्वभर के 1800 से अधिक रेटिंग वरीयता प्राप्त शीर्ष खिलाड़ियों ने अपनी चुनौती पेश की थी। इतने कड़े और चुनौतीपूर्ण मुकाबले में नरेंद्र नाथ चतुर्वेदी ने अपनी रणनीतिक कुशलता का परिचय देते हुए द्वितीय स्थान अर्जित किया। उनकी इस उपलब्धि के लिए उन्हें आकर्षक विजेता शील्ड और 6 हजार रुपये के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

लगातार दूसरी बड़ी सफलता

यह गौरवपूर्ण उपलब्धि इसलिए भी विशेष है क्योंकि पिछले दो महीनों के भीतर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह चतुर्वेदी की लगातार दूसरी बड़ी सफलता है। उनकी इस निरंतर सफलता से झाबुआ जिले के खेल प्रेमियों में भारी उत्साह और हर्ष का माहौल है।

शुभचिंतकों ने दी बधाई

नरेंद्र नाथ चतुर्वेदी की इस महती सफलता पर उनके मित्रों, सहयोगियों और खेल प्रेमियों ने खुशी जाहिर की है। जयेंद्र वैरागी, शरत शास्त्री, प्रदीप पंडिया, गणेश उपाध्याय, पीडी रायपुरिया, कुलदीप सिंह पंवार और अशोक यादव सहित अनेक गणमान्य नागरिकों ने उन्हें बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

महेश्वर में बंजारा युवा संघ की प्रांतीय बैठक संपन्न

महेश्वर। (इंदौर समाचार सुनिल गाडरे)। बंजारा युवा संघ मध्य प्रदेश की एक दिवसीय प्रांतीय बैठक खरगोन जिले की ऐतिहासिक मां अहिल्या की नगरी महेश्वर स्थित राठौड़ धर्मशाला में पूरी भव्यता के साथ संपन्न हुई। प्रदेश अध्यक्ष श्रीराम चौहान के कुशल नेतृत्व में आयोजित इस महत्वपूर्ण बैठक में संगठन की मजबूती, प्रांतीय कार्यसमिति के विस्तार और आगामी नवीन कार्यकारिणी गठन को लेकर बेहद गंभीर व विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। जय सेवालाल के गगन भेदी जयकारों के बीच शुरू हुई इस बैठक में मालवा-निमाड़ अंचल के खरगोन, खंडवा, बड़वानी, बुरहानपुर, देवास, धार, इंदौर और हरदा सहित प्रदेश के अनेक जिलों से बंजारा युवा संघ के पदाधिकारी, प्रबुद्ध प्रतिनिधि और जमीनी कार्यकर्ता बड़ी संख्या में शामिल हुए।

बैठक में वर्तमान परिदृश्य में संगठन के समक्ष आ रही चुनौतियों और विभिन्न समस्याओं पर गहन मंथन करते हुए युवा इकाई के माध्यम से एकजुट होकर धरातल पर कार्य करने का दृढ़ संकल्प लिया गया। बैठक को मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए बंजारा युवा संघ के प्रदेश अध्यक्ष श्रीराम चौहान ने कहा कि इस वर्ग का एक बड़ा हिस्सा आज भी विकास की मुख्य दौड़ से कटा हुआ है और बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहा है। इन परिवारों को शासन की समस्त जनकल्याणकारी और हितग्राही मूलक योजनाओं का सीधा लाभ दिलाकर उन्हें विकास की मुख्य धारा में शामिल करना ही हमारे संगठन का एकमात्र और प्राथमिक लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में बंजारा युवा संघ की पूरी टीम नए जोश और नई ऊर्जा के साथ सक्रिय होकर कार्य करेगी। इसके साथ ही उन्होंने संगठन की आंतरिक मजबूती पर बल देते हुए कहा कि संघ में किसी भी प्रकार की गुटबाजी या अंतर्विरोध के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

यदि पूर्व में किसी भी विषय को लेकर कोई मनमुटाव या वैचारिक मतभेद रहे हों, तो उन्हें पूरी तरह से भुलाकर केवल और केवल संगठन हित में समर्पित होना होगा। सभी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को आपसी एकता बनाए रखते हुए संगठन को और अधिक शक्तिशाली बनाना है ताकि तय उद्देश्यों को सफलता से प्राप्त किया जा सके। इस महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक प्रांतीय बैठक में एडवोकेट राम पंवार, सुनील चौहान, अर्जुन नायक, महेंद्र पंवार, अजय मुड़ , अनूप चौहान, महेश पवार , ममता राम पवार ,हुकुम पवार, कमल वडतिया , दिलीप भाई महेश नायक ,संजू नायक सहित बंजारा युवा संघ के अनेक प्रबुद्ध नागरिक, प्रांतीय पदाधिकारी तथा सक्रिय कार्यकर्ता प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। बैठक के अंत में उपस्थित सभी प्रतिनिधियों ने प्रदेश अध्यक्ष के आह्वान पर संगठन की नीतियों को जन-जन तक पहुचाने का संकल्प लिया।

प्रदेश अध्यक्ष श्रीराम चौहान के नेतृत्व में जुटे कई जिलों के प्रतिनिधि

संगठन की मजबूती पर हुआ मंथन

300 वर्ष के इतिहास में पहली बार बिछी जाजम जैनियों ने चढावों में बढ़चढ़ कर लिया हिस्सा

मनोज उपाध्याय, थांदला। नगर के ऐतिहासिक तीर्थ श्री केसरियानाथ मंदिर के नाम से प्रसिद्ध अति प्राचीन जिनालय श्री आदिनाथ ऋषभदेव, नरसिंह भगवान एवं दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेंद्रसूरीश्वरजी म.सा. के मंदिर का जीर्णोद्धार मोहनखेड़ा तीर्थ प्रणेता ज्योतिष सम्राट पूज्यनीय श्री ऋषभचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के दिव्य सपनों को साकार करते हुए उनके ही शिष्य बन्धु बेलड़ी पूज्य गुरुभगवन्त सरलमना पूज्य श्री पीयूषचन्द्र विजयजी एवं व्याख्यान प्रभावक पूज्य श्री रजतचन्द्र विजयजी म.सा. की पावन निश्रा में अपनी पूर्णता कि ओर है।

इस भव्य संगमरमर से निर्मित नवीन मंदिर का आगामी वर्ष में मुनिद्वय के सानिध्य में पाँच दिवसीय भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया जाएगा जिसको लेकर विभिन्न चढावों कि बोली के लिए अंजन शलाका प्राण-प्रतिष्ठा मह महोत्सव का आयोजन किया गया। जानकारी देते हुए संघ अध्यक्ष कमलेश जैन, प्रतिष्ठा महोत्सव समिति अध्यक्ष मयूर तलेरा,

कोषाध्यक्ष प्रफुल्ल पोरवाल, सचिव संजय फुलफगर व अर्पित लुणावत ने बताया कि जिनालय के प्राण प्रतिष्ठा में विभिन्न चढावों के माध्यम से लाभार्थी परिवार को अपने द्रव्य का सदुपयोग करने का मौका मिला। महोत्सव की शुरुआत मंदिर परिसर के बाहर प्रातःकाल नवकारसी का आयोजन करते हुए किया गया जिसका लाभ विनय कुमार, छिपानी परिवार द्वारा लिया गया वही जाजम के लाभार्थी सुशीला बेन, प्रफुल्ल - रानी पोरवाल परिवार के निवास स्थान से भव्य वरघोड़ा निकाला गया जिसमें मुनि भगवंत संग सकल जैन समाज के लोग पारंपरिक परिधान में शामिल हुए। महिलाओं ने अपने सिर पर जाजम को उठाये रखा वही पुरुष वर्ग ढोल ताशे व बैंडबाजों की धुन पर भक्ति में झूमते हुए जिन शासन की प्रभावना करते हुए मुख्य मार्गों से होते हुए आयोजन स्थल मेट्रो परिसर पर पहुँचे।

यहाँ मुनिश्री के सानिध्य में पूरे विधि विधान के साथ जाजम बिछाई गई वही भजन सम्राट दिपक करनपुरिया की धुन पर भक्ति में झूमते हुए उपस्थित थांदला सह अन्य संघों ने भी अपने द्रव्य का सदुपयोग करते हुए चढावों की बोली ली। चढावों की मुख्य बोली सहित करीब 72 प्रकार के चढावों की बोली लाभार्थी परिवारों ने ली। पूरे दिन चले इस आयोजन में बन्धु बेलड़ी मुनि द्वय न केवल उपस्थित रहे अपितु उपस्थित परिषद को चढावों का महत्व समझाते रहे वही उनकी वाणी को शिरोधार्य करते हुए लाभार्थियों ने भी बढ़चढ़ कर बोली में हिस्सा लिया।

इस अवसर पर थांदला सकल जैन संघ सहित अन्य स्थानों से आये विभिन्न संघों व लाभार्थी परिवारों के आतिथ्य सत्कार व स्वामी वात्सल्य का आयोजन क्रमशः आंनद कुमार मूलचंद लुणावत परिवार व अनोखीलाल, मनोहरलाल, रविन्द्र कुमार मोदी परिवार ने लिया है।

4 मार्च 2027 अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव का मुहूर्त गुरु भगवंत ने लाभार्थी मयूर वर्धमान जी तलेरा परिवार को प्रदान किया।

नाम परिवर्तन

I ISMAIL BAIG MIRZA S/O AZIZ BAIG MIRZA R/O ANJUMAN NAGAR, ANJUMAN SCHOOL KE PAHLE KHARGONE TEHSIL DISTT. KHARGONE M.P. THAT MY PREVIOUS NAME WAS IS ISMAIL MIRZA BEG S/O AZIZ BEG MIRZA AT PRESENT I KNOWN AS A NEW NAME IS ISMAIL BAIG MIRZA S/O AZIZ BAIG MIRZA .